B.A. (Part - II)

Methods of Qualitative or selective Credit Control (Part - C)

4. Regulation of Consumer's Credit :-
द्वितीय युद्ध-काल में सर्वप्रथम इस तरीके का प्रयोग संयुक्त राज्य अमेरिका में किया गया था। आज यह साख-नियंत्रण का एक प्रधान साधन बन गया है। युद्ध के समय बहुत सी वस्तुओं की मांग अधिक हो जाती है जिससे इनके मूल्य में वृद्धि होने लगती है तथा मुद्रा-स्फीति का दबाव बढ़ता है। अतः संयुक्त राज्य अमेरिका में 9 अगस्त 1941 ई० के एक विशेष आदेश द्वारा बोर्ड आफ गवर्नर को यह अधिकार दिया गया था कि वे आवश्यक उपभोग्य वस्तुओं के क्रय पर प्रतिबंधात्मक नियंत्रण लगा सकते हैं जिससे इन वस्तुओं की मांग न बढ़ने पाये और मुद्रा-स्फीति को प्रोत्साहन न मिले।

5. Publicity :- साख-नियंत्रण के साधन के रूप में प्रचार का भी केन्द्रीय बैंकों द्वारा प्रयोग किया जाता है। इस नीति का आधार यह है कि साख नियंत्रण की किसी भी नीति की सफलता इनके पक्ष में Effective Public opinion तैयार करने पर निर्भर करती है। भारत में भी रिजर्व बैंक आफ इण्डिया प्रतिमाह अपनी स्थिति के सम्बन्ध में एक विस्तृत विवरण प्रकाशित करता है।

6. Changes in the Margine Requirments of the Stock Market Loan :-

साख-नियंत्रण का यह तरीका भी अपेक्षाकृत नया है। इसका प्रयोग सर्वप्रथम अमेरिका में हुआ था यह पद्धति निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है :-

(i) जब मार्जिन बढ़ा दी जाती है तो विनियोग योग्य धन को सट्टेबाजी से हटाकर उत्पादन सम्बन्धी कार्यों में लगाया जाने लगता है।

(ii) सीमा बढ़ा देने से व्यापारिक बैंक की साख-सृजन की शक्ति भी घट जाती है।

(iii) सीमा बढ़ा देने से परिकल्पना लाभ की आशा कम हो जाती है।

निष्कर्ष :- इस प्रकार साख के गुणात्मक नियंत्रण के विभिन्न तरीके हैं जिनका केन्द्रीय बैंक समय-समय पर देश की आवश्यकतानुसार प्रयोग करता है।

समाप्त

धन्यवाद